INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

हिंदू-मुस्लिम संस्कृति एवं भारत

डॉ. प्रदीप शुक्ला प्रोफेसर [1]
*[1] डॉ. प्रदीप शुक्ला प्रोफेसर, इतिहास विभाग गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

DOI: **10.29121/granthaalayah.v6.i1.2018.6310**

सारांश

भारत संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखता आया है और इसलिए सभी धर्मों, जातियों एवं संप्रदायों के प्रति उसका भाव सदैव आदर का रहा। यही है उसका सर्वधर्म-समभाव और वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धांत, जिसने उसको महान् और समृद्ध बनाया है।

हिंदू-मुस्लिम सहयोग और सद्भावना का सूत्रपात साहित्य, वास्तुकला, चित्रकला और संगीत के क्षेत्रों में निर्बाध रूप से हुआ। जायसी, अब्दुर्रहीम खानखाना, रसखान, कुतबन जैसे मुस्लिम साहित्यकारों की उपलब्धियों पर प्रत्येक हिंदी साहित्य प्रेमी गर्व की अनुभूति करता है। सूजनराय खत्री का फारसी साहित्य में इतिहास लेखन सहयोग का अद्भुत प्रमाण है। कुतुबमीनार, दिल्ली का लालकिला, फतेहपुर सीकरी की इमारतें, आगरा का ताजमहल किसी एक संप्रदाय की संपत्ति नहीं, अपितु हिंदू-मुस्लिम गर्व की अनुभूति कराता है। अतः मध्ययुगीन संस्कृति को समन्वय की संस्कृति कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

Cite This Article: डॉ. प्रदीप शुक्ला प्रोफेसर. (2018). “हिंदू-मुस्लिम संस्कृति एवं भारत.” *International Journal of Research - Granthaalayah*, 6(1), 526-230. 10.29121/granthaalayah.v6.i1.2018.6310.

1. भूमिका

भारत संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखता आया है और इसलिए सभी धर्मों, जातियों एवं संप्रदायों के प्रति उसका भाव सदैव आदर का रहा। यही है उसका सर्वधर्म-समभाव और वसुधैव कुटुम्बकम् का सिद्धांत, जिसने उसको महान् और समृद्ध बनाया है।

हिंदू-मुस्लिम सहयोग और सद्भावना का सूत्रपात साहित्य, वास्तुकला, चित्रकला और संगीत के क्षेत्रों में निर्बाध रूप से हुआ। जायसी, अब्दुर्रहीम खानखाना, रसखान, कुतबन जैसे मुस्लिम साहित्यकारों की उपलब्धियों पर प्रत्येक हिंदी साहित्य प्रेमी गर्व की अनुभूति करता है। सूजनराय खत्री का फारसी साहित्य में इतिहास लेखन सहयोग का अद्भुत प्रमाण है। कुतुबमीनार, दिल्ली का लालकिला, फतेहपुर सीकरी की इमारतें, आगरा का ताजमहल किसी एक संप्रदाय की संपत्ति नहीं, अपितु हिंदू-मुस्लिम गर्व की अनुभूति कराता है। अतः मध्ययुगीन संस्कृति को समन्वय की संस्कृति कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

धार्मिक उदारता के विषय में अकेले औरंगजेब को छोड़कर भारतीय मुगल सम्राटों का समय वास्तव में आदर्श समय था। हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कटुता का संबंध प्रायः पठानों के समय तक चला। मुगलों के आगमन के बाद परिस्थिति में सुधार आने लगा। मुगल सम्राट् अकबर ने जिस उदारता का परिचय दिया, उसके बीज बाबर के ही हृदय में मौजूद थे। बाबर ने हुमायूँ के लिए

वसीयतनामा लिखा था, जिसमें हुमायूँ को उसने ये उपदेश दिए थे- 'हिंदुस्तान में अनेक धर्मों के लोग बसते हैं। भगवान् को धन्यवाद दो कि उन्होंने तुम्हें इस देश का बादशाह बनाया है। तुम तअस्सुब से काम न लेना, निष्पक्ष होकर न्याय करना और सभी धर्मों की भावनाओं का ख्याल रखना। गाय को हिंदू पवित्र मानते हैं, अतएव जहाँ तक हो सके गो-वध नहीं करवाना और किसी भी संप्रदाय के पूजा के स्थान को नष्ट नहीं करना।'

भारतीय मुगल सम्राटों के दरबारों में हिंदू-मुसलमानों के मुख्य मुख्य त्योहार एक समान हर्ष और शान के साथ मनाए जाते थे। 'दशहरे के दिन सम्राट् के हाथी और घोडे साज-सजावट के साथ जुलूस में शामिल होते थे। रक्षाबंधन के दिन ब्राह्मण लोग और हिंदू सामंत सरदार के यहाँ जाकर सम्राट् की कलाई में राखी बाँधते थे। दीपावली की रात को महल में रोशनी होती थी और जुआ तक खेला जाता था। शिवरात्रि को महलों के अंदर खास रौनक दिखाई देती थी। ठीक इसी तरह मुसलमानों की ईद और शबे-बारात भी उतने ही जोश के साथ मनाई जाती थी।'

हिंदुओं की देखादेखी मुसलमान जनता भी गाजी मियाँ, पाँच-पीर, पीर बदर, ख्वाजा, खिजिर आदि कल्पित देवताओं की पूजा करने लगी। मुसलमानों के ये पीर ग्राम देवता बन बैठे। दशहरा और रथयात्रा उत्सवों के अनुकरण पर मुहर्रम में ताजिये निकाले जाने लगे एवं ताजियों में हिंदू और मुसलमान बिना किसी भेद-भाव के सम्मिलित होने लगे। ताजियों के पीछे चूँकि हजरत अली के बेटे हजरत इमाम हुसैन की याद थी और हजरत अली बल के आगार थे, इसलिए ताजियों की संरक्षकता गाँवों के नामी पहलवान करते थे, जिसमें बहुधा हिंदू पहलवानों की भी गिनती होती थी। अखाड़ों में जैसे हिंदू 'जय महावीर' का नारा लगाते थे, वैसे ही ताजियों के जुलूसों में सभी हिंदू उल्लास के साथ 'या अली' पुकारते थे।

इस्लाम एकेश्वरवादी और मूर्तिपूजा विरोधी धर्म है, परंतु भारतीय मुसलमान प्रायः फकीरों और उनके मजारों को पूजते हैं। कुछ पवित्र पूजागृहों, यथा अजमेर में शेख सलीम चिश्ती की दरगाह और मथुरा के भैरवनाथ के मंदिर पर हिंदू और मुसलमान दोनों ही बड़ी संख्या में देखे जाते हैं। मुसलमानों में एक पंच-पीरिया संप्रदाय के लोग दरवेशों की इस सीमा तक पूजा करते हैं कि सन् १९११ की जनगणना में इनको ऐसा 'हिंदू' लिखा गया जिनके धर्म में इस्लाम की सुगंध आती है। हजरत मुहम्मद का यकीन चमत्कारों में नहीं था, परंतु भारतीय मुसलमान तो अपने औलियाओं की इबादत भी करते हैं और उनकी चमत्कारी शक्तियों का अहसास भी उन्हें है। बहुत से मुसलमानों में तो मूर्तिपूजा की प्रथा भी दिखाई देती है, यथा-उत्तर प्रदेश के चैरिहार कालका सहजा माई को पूजते हैं और श्राद्ध भी करते हैं। पंजाब के मिओ बहुत से देवी-देवताओं की पूजा करते हैं, जैसे-सैनसी, मगती और लाची। मीरासी दुर्गा भवानी का प्रसाद ग्रहण करते हैं। पूर्वी बंगाल के तुर्क-नवाज लक्ष्मी की पूजा करते हैं। बहुत से बंगाली मुसलमान शीतलामाता, काली, धर्मराज, वैद्यनाथ और अन्य हिंदू देवी-देवताओं को पूजते हैं। पंजाबी अवानों के कुल पुरोहित ब्राह्मण हैं और सिंधु घाटी के शिन मुसलमान तथा कच्छ के मोमिन गाय को पूजते हैं और गोमांस नहीं खाते। मोमिन तो हिंदू त्रिदेवों- ब्रह्मा, विष्णु और महेश का भी पूजन करते हैं और 'राम-राम' कहकर अभिवादन करते हैं। मुसलमान संत मुंडित व शरीर पर भस्म लेपन किए हुए देखे जाते हैं और कहीं-कहीं मंदिरों के संरक्षक भी हैं। पश्चिमी पंजाब में झंग तथा उत्तर प्रदेश में गोरखपुर जैसे मुस्लिम क्षेत्र पवित्र समझे जाते हैं।

सिद्धों के समय से भारत में जो निराकारवादी संप्रदाय पनपते आ रहे थे, उनके बहुत से सदस्य तो मुसलमान हो गए और बहुत ऐसी जगहों पर रह गए जो हिंदुत्व और इस्लाम, दोनों के नजदीक थे। बंगाल के बाउल ऐसे ही संप्रदायों की यादगार है। अजमेर में कुछ लोग अपने को हुसैनी ब्राह्मण कहते हैं। ये न तो कट्टर हिंदू हैं, न कट्टर मुसलमान। राजपूताने और आगरा जिले के मलडाना राजपूत मुसलमान हैं, मगर वे हिंदू के समान रहते हैं, राम-नाम जपते हैं और दरगाहों पर भी जाते हैं। गुजरात के खोजा संप्रदाय पर वैष्णव धर्म का बहुत प्रभाव पड़ा था। वल्लभाचार्या वैष्णवों के समान खोजा लोग भी अपने को गुरु का परमदास मानते हैं और गुरु को साक्षात् कृष्ण का अवतार समझते हैं। इनके बहुत से रीति-रिवाज हिंदुओं जैसे ही हैं।

हिंदू-मुस्लिम ऐक्य में जो वृद्धि मुगलकाल में हुई, वह अब भी शेष है। आगरे के मलकाना राजपूत मियाँ ठाकुर कहलाना पसंद करते हैं। बिहार में भी कुछ ब्राह्मणों की पदवी खाँ है। उत्तर प्रदेश में कुछ ऐसे भी मुसलमान हैं जो राजपूत मुसलमान, तेली मुसलमान और ब्राह्मण मुसलमान कहलाते हैं।

बंगाल में हिंदू-मुस्लिम संस्कृतियों के बीच जो मिश्रण हुआ, उसका एक प्रमाण 'सत्यपीर' की पूजा भी मानी जा सकती है। यह पूजा हुसैनशाह के समय प्रवर्तित की गई एवं सत्यनारायण की पूजा इसका मूल स्रोत थी। सत्यपीर का पूजन करने एवं उनका माहात्म्य सुनने के लिए हिंदू और मुसलमान दोनों ही जातियों के लोग जमा होते थे। बंगाल में रमाई पंडित ने एक शून्य पुराण भी लिखा

(चैदहवीं सदी), जिसमें कहा गया है कि ब्राह्मणों से सतधर्मी जब बहुत पीड़ित होने लगे तब उनकी रक्षा के लिए धर्म ने ही मुसलमानी रूप धारण किया और सभी देवता पैजामा पहनकर ब्राह्मणों को मारने को आ गए। मुसलमानों के सूफी धर्म पर हिंदू धर्म का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। सूफियों ने उपवास करना, शरीर को यातना देना आदि हिंदू व बौद्ध सिद्धांतों को अपना लिया। शायद इसीलिए विद्वान् भारत के भक्ति आंदोलन को इस्लाम की ही देन मानते हैं, क्योंकि इस्लाम के समान इसमें भी एकेश्वरवाद और भक्ति पर जोर दिया गया था, हालाँकि यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि भारत में भक्ति की परंपरा हजारों साल पुरानी है।

हिंदुओं के बहुत से रिवाज उच्च वर्ग के मुसलमानों में स्वयं ही चल पड़े। नजर लगने से बचने के लिए न्योछावर उतारने की परिपाटी बादशाहों की हवेलियों में थी। शहजादे भी यात्रा पर निकलने से पहले बाँहों पर मंत्र सिद्ध यंत्र बंधवाते थे। मुहम्मद तुगलक लडाइयों पर जाने से पहले हिंदू योगियों से आशीर्वाद माँगा करता था। बहुत से शेख और मुस्लिम पीरों ने हिंदू मठों की नकल पर गद्दियाँ भी स्थापित की।

कहते हैं राजपूतों की देखादेखी कुछ मुसलमानों ने भी जौहर की प्रथा अपना ली थी। भटनेर के सूबेदार कमालुद्दीन ने तैमूर से लड़ने जाने के पहले अपने सैनिकों की पत्नियों को आग में कूद जाने का आदेश दिया था।

जहाँगीर जब कश्मीर गया तब वहाँ उसने कुछ ऐसे मुस्लिम राज्य भी देखे जो सती-प्रथा को मानते थे तथा जिनका शादी-विवाह हिंदू-घरानों में होता था। आज भी कुछ लोग पहले हिंदू विधि से विवाह करते हैं और बाद में निकाह पढ़ते हैं। यह हिंदू प्रभाव ही है कि मुस्लिम समाज में एक विवाह और विधवा-विवाह भी यदाकदा होने लगे। नित्य स्नान करने की आदत और त्योहारों की पवित्रता आदि हिंदू मान्यताएँ भी मुसलमानों ने अपना लीं।

अकबर के हिंदू विवाह संबंधों ने इंडो-इस्लामी मेल को सफल बनाने में अपना प्रबल योगदान दिया। जो हिंदू नारियाँ मुगलों के घर ब्याही गईं वे राजमहल में हिंदू विधि से ही रहती थीं। ऐसा कहा जाता है कि रानी जोधाबाई के आँगन में तुलसी का पौधा सदैव लहलहाता था, होम और यज्ञ भी बराबर होते रहते थे।

उच्च वर्ग के हिंदुओं ने मुसलमानी खान-पान और पोशाकें खुशी-खुशी अपना लीं। चीरा और पाग मुसलमानों ने हिंदुस्तानियों से लिया और बदले में कसे चुस्त पायजामे राजपूतानियों ने मुस्लिम नारियों से लिये। हिंदुओं की पगड़ी मुसलमानों ने और मुसलमानों की शेरवानी और अचकन राजपूतों ने अपना ली। बिरयानी पकाने का रिवाज भारत में मध्य-पूर्वी एशिया से आया और हुक्के का रिवाज यहाँ इसलिए चला कि पुर्तगालियों ने मुसलमानों के समय में ही भारत में तंबाकू का प्रचार किया था। खासकर उत्तर भारत के रहन-सहन और वेशभूषा में मुसलमानों का प्रभाव साफ दिखाई देता है। पंजाबी, हिंदी, बँगला, गुजराती और मराठी भाषाओं में आज तक असंख्य फारसी, अरबी और तुर्की शब्द भरे हुए हैं। उत्तर भारत में यदि किसी हलवाई की दुकान पर मिठाइयों के नाम गिने जाएँ तो उनमें बालूशाही, गुलाब जामुन, बरफी, हलवा, जलेबी, कलाकंद, खुरमा इत्यादि अधिकांश नाम अरबी या फारसी भाषा के हैं और इनमें से अधिकांश मिठाइयाँ मुगलकाल की ईजाद हैं। यहाँ तक कि हिंदुओं के विवाह जैसे संस्कार में 'सेहरा' और 'जामा' जैसी चीजों का अभी तक उपयोग किया जाता है। इतना ही नहीं, कुरान में भी कुछ संस्कृत-मूल के शब्द आए है, जैसे-तोबा, सुंदास, अलबाइ आदि।

हिंदुओं और मुसलमानों के बीच जो समान रीति-रिवाज और आदतें प्रचलित हैं, उनकी काफी लंबी सूची राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'खंडित भारत' में दी है। इस्लाम की परंपरा सादगी और मितव्ययता की थी, किंतु हिंदू संपर्क के कारण छत्र, चैंबर, हीरे-मोती, जड़ाऊ खड्ग, कीमती राजसी पोशाक और सजे हुए हाथी-घोड़े, जो हिंदू राज-दरबार की विशेषताएँ थीं- मुलिसम राज दरबारों की मुख्य विशेषता बन गईं। इसी तरह पान चबाने की आदत मुसलमानों ने हिंदुओं से ली थी, लेकिन पीछे चलकर पान चबाने में भी हिंदुओं को उन्होंने मात दे दी। कहते हैं चैदहवीं सदी में पान खाने का रिवाज हिजाज और यमन तक फैल गया था।

फलों से अचार तैयार करने की भारतीय प्रथा मुसलमानों ने भी सीख ली और भारत के मोहनभोग का प्रभाव पुलाव पर पड़ा। भारतीय मुसलमानों का पुलाव और कोरमा यहीं तक सीमित नहीं रहा, यह ईरान और खुरासान में भी पहुँचा।

हिंदू प्रभाव से मुस्लिम अमीरों के अंधविश्वास में कुछ नफासत भी आने लगी। हुमायूँ और अकबर हर रोज पोशाक उस रंग की पहनते थे जो उस दिन के स्वामी-ग्रह का रंग होता था। सौभाग्यवती मुस्लिम स्त्रियाँ भी माँग में सिंदूर लगाने तथा नाक में नथ और हाथ में शंख की चूड़ियाँ पहनने लगीं। विवाह के अवसर पर सोहागपुरा ले चलने की प्रथा भी मुसलमानों के यहाँ हिंदुओं की देखा-देखी शुरू हुई है। हिंदू जैसे श्राद्ध करते हैं, उसी प्रकार मुसलमान भी मृत व्यक्तियों के नाम पर भोज करने और खैरात बाँटने लगे। हिंदुओं की जाति प्रथा ने भी मुस्लिम समाज को प्रभावित किया और मुसलमान भी शरीफ और रजील जातों का भेद करने लगे एवं जुलाहों और

धुनियों के साथ शरीफ जातवालों को खाने-पीने में आपत्ति होने लगी। बिहार में छोटी जात के मुसलमान भी छठ का व्रत (सूर्यपूजा) करने लगे। स्वयं अकबर भी माथे पर तिलक लगाता था और सूर्य की उपासना किया करता था।

आचार के मामले में हिंदुओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि मुसलमानों का छुआ हुआ पानी भी हम नहीं पिएँगे, न उनके साथ रोटी-बेटी का संबंध बनाएँगे। किंतु विचार के धरातल पर हिंदुओं ने इस्लाम को भी आदरणीय धर्म मान लिया। राणा कुंभा के प्रसिद्ध कीर्ति-स्तंभ में हिंदुओं के सभी देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं, किंतु अरबी अक्षरों में अल्लाह का नाम भी उस पर खुदा है। 'वह निराकार ब्रह्म का अरबी नाम है। इस प्रकार इस्लाम के बुनियादी विचार को हिंदुओं ने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया।'

मुसलमानों की सभी लडाइयाँ हिंदुओं के ही विरुद्ध नहीं थीं, वे आपस में भी लड़ते थे, जैसी लडाइयाँ हिंदुओं ने भी हिंदुओं के विरुद्ध लड़ी थीं। अनेक बार ऐसा भी हुआ कि लडाइयों में हिंदुओं ने मुसलमानों का और मुसलमानों ने हिंदुओं का साथ दिया। बाबर और राणा सांगा की लडाई में सुल्तान महमूद लोदी और मेवात के हसन खाँ राणा के साथ थे। हेमू अफगानों का सेनापति था और दरबार ने हिंदू परंपरा के अनुसार उसे 'विक्रमादित्य' की पदवी से सम्मानित किया। औरंगजेब के समान कट्टर हिंदू विरोधी बादशाह भी अपनी फौज में हिंदू सेनापति रखता था। इसी प्रकार महाराणा प्रताप और शिवाजी महाराज की सेना में भी पठान अफसर थे। शिवाजी के यहाँ तो मुसलमान अच्छे से अच्छे पदों पर नियुक्त किए गए थे। यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि ११९३ से लेकर १५२६ ई. तक दिल्ली के सिंहासन पर जो ३५ सुल्तान बैठे, उनमें से १९ सुलतानों की हत्या हिंदू नहीं, बल्कि मुस्लिम दुश्मनों के हाथों हुई थी।

सामाजिक संस्कृति के कुछ और रूप अन्य क्षेत्रों में भी देखे जा सकते हैं-कई धातुओं से रसायन बनाने का रिवाज, कागज बनाना और कलई करना, चीनी मिट्टी के बरतनों का निर्माण, कश्मीरी तिल्ले का कार्य, मुलम्मासाजी, कुटे हुए कागज से खिलौने बनाने की कला के अलावा नूरजहाँ की ईजाद गुलाब का इत्र बनाने की विधि, पत्थर, चाँदी और सोने पर मीनाकारी, जामदानी, कलाबत्तू जरदोजी, किमखाब और जामेवाद भी मुस्लिम काल में ही चले। हमारी देशांतर और अक्षांश रेखाएँ गिनने की प्रणाली तथा वर्षफल बनाने की ताजिक-पद्धति भी यहाँ मुसलमानों के आगमन के बाद प्रारंभ हुई। ज्योतिष की अरबी पद्धति के आने के बाद ही महाराज जयसिंह ने हिंदू पंचांग का सुधार किया और जयपुर, मथुरा, दिल्ली तथा काशी में वेधशालाएँ बनवाईं।

साहित्य और कला के क्षेत्र में भी दोनों संस्कृतियों का बहुत ही खूबसूरत सम्मिश्रण हुआ। मनोहर मिश्र, जगतराम, बीरबल, होलराय, टोडरमल, भगवान दास, मानसिंह, नरहरि और गंग को अकबर ने बड़ा सम्मान दिया। चित्रकारों में भी मुकुंद, महेश, जगन, हरिवंश और राम का मुगलों के यहाँ बड़ा सम्मान था। जैसे पठान-युग में खुसरो, कबीर, जायसी आदि मुस्लिम कवियों ने हिंदी साहित्य की रचना की थी, वैसे ही मुगलकाल में रसखान, आलम, जमाल, रसलीन, कादिर, मुबारक, रहीम और ताज ने हिंदी की बहुत अच्छी सेवा की। दाराशिकोह तो हिंदी, संस्कृत और हिंदुत्व के पक्षपाती होने के कारण मुसलमानों में काफी बदनाम थे। कहते हैं कि उनकी अँगूठी पर नागरी अक्षरों में 'प्रभु' शब्द अंकित रहता था। शेरशाह के सिक्कों पर भी नागरी और फारसी अक्षरों में उसका नाम खुदा रहता था। उसके कई सिक्के ॐ और स्वास्तिक के चिह्नवाले भी पाए गए हैं। इतना ही नहीं, फारसी और हिंदी का मिला-जुला रूप 'उर्दू' इंडो-इस्लामिक मेल का एक बढ़िया उदाहरण है। अमीर खुसरो पहले मुसलमान साहित्यकार थे, जिन्होंने हिंदी को महत्त्व देते हुए अरबी की अपेक्षा हिंदी में बात करना अच्छा समझा। उन्होंने 'गूर्रत-उल-कमाल' की भूमिका में लिखा है, 'मैं भारतीय तुर्क हूँ और तुम्हें हिंदवी में उत्तर दे सकता हूँ। अरबी की बात करने के लिए मेरे पास मिसरी, शक्कर नहीं है। चूँकि मैं हिंद का तोता हूँ इस कारण हिंदवी में मुझसे कुछ पूछो ताकि मैं मीठी बात कर सकूँ।'

स्थापत्य कला के क्षेत्र में मस्जिदों, मकबरों और गुंबदों का निर्माण हुआ-मुसलमानों के भारत आने के बाद। परिमाणस्वरूप मुस्लिम- मेहराब, गुंबद, मीनारें, रेखाकृत डिजाइन की सजावट तथा हिंदू कला के नक्काशीदार खंभे, तोड़े, छज्जे, उदंबर पदमकोष, कलश आदि कुछ इस तरह से घुलमिल गए कि उन्हें अलग करना मुश्किल हो गया। अकबर की हिंदू रानी जोधाबाई का महल - एक संपूर्ण धर्मनिरपेक्ष इमारत का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

भारतीय एवं ईरानी संगीत के मिलने से नई-नई चीजें निकल पड़ीं। कव्वाली और ध्रुपड अमीर खुसरो की देन हैं, जबकि खयाल का आविष्कार जौनपुर के नवाब सुलतान हुसैन शर्की ने किया था। समान, भूजिर, सज्जगारी, दरशाक, मुवाफिक, जजन, जिलफ, कौल-तराना, शाहना और सुहेला आदि रागों के अलावा खुसरो ने भारतीय वीणा और ईरानी तंबूरे के मेल से जहाँ सितार को जन्म दिया, वहीं मृदंग से तबले का निर्माण किया। बीजापुर के इब्राहिम आदिलशाह ने संगीत पर 'नौरस' नामक पुस्तक की रचना की।

हिंदू-मुस्लिम सम्मिश्रण के उपर्युक्त उदाहरण देने के बाद भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि मुस्लिम धर्म के आगमन से भारत में संस्कृति की जो धाराएँ बहने लगीं- वे हमेशा समानांतर रूप से चलती रहीं। कहीं-कहीं वे एक-दूसरे को स्पर्श जरूर करती हैं, लेकिन मिलकर एक नहीं हो पातीं।

संदर्भ

[1] डॉ. ताराचंदः इंफ्लुएंसेस ऑफ इस्लाम ऑन इंडियन कल्चर।

[2] प्रो. हुमायूँ कबीर: अवर हेरिटेज।

[3] चार्ल्स इलियट: हिंदुइज्म एंड बुद्धिज्म।

[4] डॉ. आबिद हुसैन: भारत की राष्ट्रीय संस्कृति।

[5] डॉ. यूसुफ हुसैन: गिल्मपेसस ऑफ मिडीवल इंडियन कल्चर।

[6] डी.एम. डोनाल्डसन: स्टडीज इन मुस्लिम-एथिक्स।

[7] पी.एन. चोपड़ा: सोसाइटी एंड कल्चर इन मुगल एज।

[8] डॉ. ए.एस. अल्तेकर: द पोजीशन ऑफ वीमेन इन हिंदू सिविलाइजेशन।

[9] राहुल सांकृत्यायन: नया समाज, अप्रैल १९५१।

[10] डॉ. धीरेंद्र वर्मा: साहित्य चिंतन।

[11] डॉ. बाबूराम सक्सेना : दक्खिनी हिंदी।

[12] रामचंद्र शुक्ल: हिंदी साहित्य का इतिहास।

[13] पं. अंबिका प्रसाद वाजपेयी: हिंदी पर फारसी का प्रभाव।

[14] विल डूरंटः अवर ओरिएंटल हेरिटेज।

[15] मि. फर्ग्यूसन: मध्यकालीन भारतीय संस्कृति।

[16] सुंदर लालः भारत में अंग्रेजी राज, भाग-एक।

[17] ण् रामधारी सिंह ‘दिनकर’: संस्कृति के चार अध्याय।

[18] डी.एस. शर्मा: रेनेसाँ ऑफ हिंदुइज्म।

[19] मुहम्मद अली: रिलीजन ऑफ इस्लाम।

[20] दामोदर सिंहल: आधुनिक भारत का सांस्कृतिक इतिहास।

[21] डॉ. झारखंडे चैबे एवं डॉ. कन्हैयालाल श्रीवास्तव: मध्ययुगीत भारतीय समाज एवं संस्कृति।

[22] जान विंकर्टन: ए जनरल कलेक्शन ऑफ द बेस्ट एंड मोस्ट इंटरेस्टिंग वामनेस एट्स, वॉल्यूम-ष्प्

[23] बेनी प्रसाद ः हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर।

[24] के.ए. निजामी: रिलीजियस एंड पॉलिटिक्स एट्स।

[25] मरेटी. टाइटस: इस्लाम इन इंडिया एंड पाकिस्तान।